Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

दूसरा ताजमहल : आधुनिक नारी की मनोसंवेदना का दूसरा पड़ाव

ममता यादव
(नेट / जे0आर0एफ0)
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
पी0जी0 कालेज, गाजीपुर
(सम्बद्ध : वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ0प्र0)

शोध आलेख सार – नासिरा शर्मा की कथा पात्र 'नयना' ने प्रेम का नाम जिंदा रखा और उसकी वेदी पर अपने जीवन को होम कर दिया। इस कहानी का अनुशीलन करने पर, प्रेम की थकान, निष्फलता और घायल मन की व्यथा की अनुभूतियाँ निःसंकोच हमें 'महादेवी वर्मा' की पक्तियों में मिलता है।

मुख्य शब्द – दूसरा ताजमहल, आधुनिक नारी, मनोसंवेदना, दूसरा पड़ाव, नासिरा शर्मा, नयना, थकान, निष्फलता, घायल मन

आधुनिक समय की व्यस्ततम और भागमभाग भरी जीवनचर्या ने मनुष्य को कहीं न कहीं प्रेम के प्रति संवेदनााून्य करके हृदयरिक्त कर दिया है। यान्त्रिक जीवन में रिश्ते तो बहुत हैं किन्तु संवादहीन। ऐसी परिस्थिति में इन्सान कहाँ जाये जहाँ अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और जज्जबातों को दूसरों पर प्रकट कर सके; अपनी मनःस्थितियों को समझा सके और अपने मन के बोझ को हल्का कर सके। अपने जीवन के खालीपन को भरने के लिए मनुष्य कभी–कभी ऐसी तलाश में निकलता है जहाँ रास्ते तो मिलते हैं किन्तु मंजिल नहीं, मिलती है तो बस छलावा, धोखा और फिर वही खालीपन। ऐसी स्थिति में मनुष्य की संवेदनाएँ उनका व्यक्तित्व कुण्ठित हो जाता है, जिसे 'डॉ0 भारती बालकृष्ण घोंगड़े द्वारा दी गयी परिभाषा से समझा जा सकता है– ''जिस संवेदना के अन्तर्गत विकृत तथा मार्मिक संवेदना का समावेश होता है, उसे मनोवैज्ञानिक संवेदना कहा जाता है। मनोवैज्ञानिक कहानियें में व्यक्तित्व का प्रतिफलन है।''[1]

वर्तमान में मानव समाज ने प्रेम को मात्र एक यान्त्रिक संवेग बनाकर रख दिया है। जिसमें वो जब चाहे, जिससे चाहे उसकी भावनाओं से खेलता है और भूलकर आगे निकल जाता है जिसे हम पुरुष या स्त्री वर्ग कहकर या इसे दो खेमों में बाँटकर नहीं देख सकते। आज यह दोनों की ही समस्या है, किन्तु एक का व्यवहार दूसरे को जड़ भी बना सकता है और चेतनात्मक भी। यदि यह जड़ समस्या का रूप अख्तियार कर ले तो इसका परिणाम बहुत ही भयानक सिद्ध होता है।

ऐसी ही मनोवृत्तियों को पृष्ठभूमि बनाकर लिखी गयी कहानी है– 'दूसरा ताजमहल' जिसकी रचना 'व्यास सम्मान' तथा 'साहित्य अकादमी' जैसे प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित मशहूर कथाकार 'नासिरा शर्मा' ने की है। साहित्य जगत् में सन् अस्सी के दशक से लगातार लेखन में सक्रिय लेखिका ने कथा–जगत् को कहानी, उपन्यास, रिर्पोताज आदि विविध रूपों में एक अमूल्य अनुपम निधि प्रदान की है। आधुनिक महिला कथाकारों के बीच में 'नासिरा शर्मा' का अपना एक विशिष्ट स्थान है। इनका साहित्य राष्ट्रीय से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय ज्वलन्त मुद्दों का जीवन्त दस्तावेज है। इनके सम्पूर्ण कथा–साहित्य को पढ़कर एक निष्कर्ष निकलता है जिसे हम दुष्यन्त कुमार की इन पंक्तियों में प्रकट कर सकते हैं–

''सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेनिक आग जलनी चाहिए।''[2]

अर्थात् हम सभी को मिलकर ऐसी कोशिश करनी चाहिए जिससे परिस्थितियाँ बदलें और समस्या का समाधान हो और ऐसी ही समस्या है, मनुष्य का वचनबद्ध होकर भी अपने वचनों पर टिके न रह पाना जिसका विवेचन और विश्लेषण हमें अनायास सोचने पर मजबूर करता है कि, हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ जीवन तो है किन्तु उसकी जीवन्तता कहीं खो सी गयी है। इसका जीता जागता प्रमाण है कहानी– 'दूसरा ताजमहल' जिसे आधुनिक नारी की संवेदना का दूसरा पड़ाव कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

'दूसरा ताजमहल' जहाँ 'ताजमहल' के नाम से ही हमारे जेहन में अचानक ही बादशाह शाहजहाँ का नाम स्मरण हो आता है, जो अपनी बेगम मुमताजमहल से बेइन्तहा प्यार करता है, और अपने वचनों के प्रति निष्ठावान रहकर अपनी बेगम की स्मृति में हसीन ताजमहल का निर्माण करवाता है। किन्तु आज का मनुष्य 'प्राण जाय पर वचन न जाय' जैसी परम्परा को भूलकर दाम्पत्य जीवन में छल और धोखे की प्रतिमूर्ति बन कर खड़ा है। आधुनिक पुरुष पल में तोला और पल में माशा जैसी प्रवृत्ति का दास बनता हुआ नजर आ रहा है।

कहानी की नायिका है 'नयना' जो पेशे से एक इंटीरियर डेकोरेटर है, नयना की शादी उसकी अपनी पसन्द की थी, उसका पति पेशे से डॉक्टर है, जो डायरेक्टर के पद पर आसीन है, दो बेटे हैं जो शिक्षा प्राप्त करने विदेश चले गये हैं। ऐसे में दिन–प्रतिदिन पिछले पाँच–छः वर्षों से वह अकेलेपन का शिकार हो रही है। नयना के पति नरेन्द्र अपने पेशे में इतने व्यस्त हैं कि वो अपनी पत्नी के लिए समय नहीं निकाल पाते। ऐसे में नायिका का क्रोध लाजमी है, वह तीन दिन से घर में अकेली है। उसके आक्रोश की अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार है– ''ऐसा भी क्या

पागपन जो रात–दिन अस्पताल में रहना, आखिर घर की भी कोई जिम्मेदारी है। सारे दिन की उड़ान के बाद परिन्दे भी तो अपने घोंसले को लौटते हैं।''[3] इन परिस्थितियों में उसकी मुलाकात एक वास्तु विशारद रविभूषण से होती है जो प्रथमतया औपचारिक ही रहती है, किन्तु धीरे–धीरे यह औपचारिक मिलन प्रेम का रूप धारण कर लेता है जिसके पीछे सबसे बड़ा कारण–नयना का खालीपन और उसका निरन्तर मनोवैज्ञानिक स्तर पर अकेलेपन का शिकार बनते जाना दिखाई देता है। 'रोहिताश्व' के शब्दों में–

''नयना अपनत्व का, प्यार का बेहताशा समर्पण का ताजहल चाहती है, वह अगर डॉ0 नगेन्द्र से न मिला तो रविभूषण से पाना चाहती है।''[4]

इस कहानी का पात्र रविभूषण उस मृगमरीचिका के समान है, जिसके लिए प्यार बस एक छलावा है। रविभूषण और नयना दोनों ही गृहस्थ जीवन से सरोकार रखते हैं। जहाँ वैवाहिक बन्धन में बँधकर भी नयना को अपनी तन्हाई का सहारा मिलता है वहीं रविभूषण को नशेमन की अभिव्यक्तियों के जरिये के रूप में उसे नयना मिल जाती है। वह प्रत्येक रात्रि नशे से धुत होकर नायिका से प्रेम में पगी बातें करता है और नयना उसे अपने जीवन में सत्य मानकर उस धारा प्रवाह में बहती चली जाती है। लेखिका का वक्तव्य है– ''दो मुलाकातों के बाद घटनाएँ संवेदना के जिस स्तर पर जिस तरह से घटीं थीं सारी मौखिक थीं, मगर उनमें जादू था, जो नयना के सिर चढ़कर बोल रहा था।''[5] उम्र के तीसरे पड़ाव में वह एक किशोरी की भाँति प्रेम में हिचकोले खा रही थी, उसके अन्त से बिल्कुल अनभिज्ञ। कहना उचित है– प्रेम की कोई भाषा नहीं होती, उम्र की सीमा नहीं, जाति–धर्म का बन्धन नहीं उसके अपने सिद्धान्त और अपने ही दृष्टिकोण होते हैं।

इस बीच नयना पुनः जीवित हो उठी थी, और अब उसे अपने पति की व्यस्तता सामान्य सी लगने लगी थी। उसे इस बात का कोई अन्दाजा न था कि वह प्यार की नौका और भावनाओं का पतवार लेकर रविभूषण के भँवरजाल में फँसती जा रही थी इस बात से नयना अनजान थी कि जो उसके साथ हो रहा है वह रविभूषण के जीवन का नियमित हिस्सा है और उसके जीवन में नयना की जगह कोई भी दूसरी औरत ले सकती। एक वक्त उसे रवि का कथन भी याद आया था– ''कभी–कभी पल भर की मुलाकात पूरी जिन्दगी पर भारी होती है।''[5] वह सोचकर भी उस प्रेममाया की अन्धेरी गली से निकल नहीं पाती, निकलती भी कैसे– नरेन्द्र ने काफी अरसे से उसके जीवन को एक बंजर धरती के समान आसमान की तरफ केवल एकटक देखने के लिए उसे अकेला छोड़ दिया था।

नरेन्द्र की लापरवाहियों ने ही नयना को रविभूषण जैसी गहरी खाई में गिरने के लिए विवश किया था। अपना पूरा समय अपने पेशे को देने के बाद भी यदि कोई अनहोनी घटे तो पति के क्रोध का शिकार भी वही बनती है उसकी अनुभूतियाँ लेखिका के शब्दों में फूट पड़ती है– ''सारी जिन्दगी नरेन्द्र ने अपनी लापरवाही का इल्जाम नयना पर थोपा है। उसकी हर गलती को नयना ने हँसकर टाला है, मगर कब तक ? वह भी इंसान है, उसको भी प्यार चाहिए, धन्यवाद वाले चंद शब्द, ताकि वह भी जी सके, मगर पूरी जिन्दगी इस इस घर की सलीब पर टंगी हर तरफ से ताने सुनती रहती है।''[6]

ऐसा नहीं था कि नायिका ने अपने पति से प्रेम की याचना नहीं की, किन्तु दाम्पत्य तो समर्पण है, उसमें लेन–देन कहाँ होता है। पर यहाँ सब विपरीत है, नरेन्द्र तो नयना के प्रति भावनारहित हो चुका है, उसका पूरा समय

अपनी डॉक्टरी और अपनी तरक्की में खप जाता है जिसमें नयना अपना अक्स ढूँढ़ने की कोशिश करती है किन्तु विफल हो जाती है।

दूसरी तरफ रविभूषण है जिसकी बेहोशी की हालत में कहे गये वचनों को वह अपने अहसासों से जोड़ लेती है किन्तु उसके साथ यह भी एक कपट ही था। जिस नारी का व्यवसाय दूसरों के घर को सजाना है, वह अपने ही सपनों के घर को सजाने में नाकामयाब है। एक शाम वह रविभूषण के बहकावे में आकर अपना सर्वस्व त्याग कर उसके पास चली जाती है किन्तु जब वहाँ पहुँचती है तो उसे रवि की वास्तविकता की पहचान होती है। हालाँकि ये प्रश्न उसके मन में बहुत पहले ही आकार ले चुके थे कि– ''यदि रवि की बातें भी नरेन्द्र की तरह धोखा साबित हुईं तो वह अपने अकेलेपन को कैसे सँभालेगी। किन्तु उसकी बातों को सोच कर आगे बढ़ जाती है, इन्हें यथार्थ जगत का सत्य मानकर वह रवि को दुनिया का श्रेष्ठ पुरुष मान बैठती है। उसके दिये गये एक ही वक्तव्य ने नायिका के सपनों के ताजमहल को एक ही झटके में ढहा दिया। ''अपने को असहज स्थितियों से सहज बनाये रखने के लिए अक्सर लोगों को गैर जरूरी चीजों का सहारा लेना पड़ता है।''[7]

नयना को एहसास हुआ कि वह उसके लिए एक गैर जरूरी चीज मात्र ही तो थी, जिसे आज कुछ भी याद नहीं वह सब कुछ एक तिलस्मी ताजमहल की भाँति चकनाचूर हो गया, जिसे इतनी दूर से सहेजकर नयना लेकर आयी थी।

इस घटना के बाद वह अन्दर से टूट चुकी थी। स्वयं को समेटकर वह वापस आती है और अपने अन्दर ही अन्दर उन सवालों का जवाब ढूँढ़ने का प्रयत्न करती है– ''मोहब्बत के बिना यूँ जिन्दगी जीने का मकसद ? क्या अब कोई भी किसी से प्यार नहीं कर पायेंगा ? ऐसा प्यार जो दो लोगों के बीच हुई जबानी बात का सन्दर्भ तलाश कर सके ?''[8] इन सवालों को अपने जेहन में लिए ही नयना इस जीवन को अलविदा कह जाती है।

नासिरा शर्मा ने यथार्थ और कल्पना के सहारे रोमेण्टिक ट्रेजडी को भाषा का रूप देकर शतरंज की एक विशात बिछायी है जिसमें नयना, नरेन्द्र और रविभूषण मोहरे है। ये ऐसे मोहरे हैं जो कुण्ठित, संवेदनशून्य और जड़ होकर अपनी चाल चलते जा रहे हैं जिसमें जीतने वाला कोई नहीं किन्तु हार प्रीति की खोज में निकली नयना के अतृप्त भटकाव की होती है। नारी के जीवन उसके मन की अनुभूति, उसके मर्म की अभिव्यक्ति असीमित है। एक द्रष्टा और संवेदना के स्तर पर उसकी अभिव्यक्ति करना भी सहज कार्य नहीं है। समाज में स्त्री के बदलते सम्बन्ध उसके पीछे छुपी दुविधा ही उसकी ईमानदारी और निष्ठा का परिचय देते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में डॉ0 सरोज सिंह का वक्तव्य सार्थक है– ''आज भी प्रबुद्ध स्त्री, यह सोचती है कि मैं कौन हूँ ? समाज में मेरी स्थिति क्या है ? मेरी स्वतंत्र सत्ता कहाँ है– भीतर ही भीतर सुलगते इस प्रश्न में निजी अस्तित्व, निजी अस्मिता की इस छिपी कामना को कोई नाम नहीं दिया जा सकता''[9] और यही सत्य है।

ईमान का वह कौन सा मापक है जिसके प्रति इंसान प्रतिबद्ध होकर जीवन निर्वाह करे। प्रेम के स्पर्श की अभिलाषा तो मनुष्य के जीवन के हर पड़ाव पर होती है। नयना ही क्यों ? इस जहाँ की न जाने कितनी ऐसी स्त्रियाँ हैं जो इस दौर से गुजरती हैं। एक भरा–पूरा परिवार भी देकर वो अपने ही मकान में उस हरे–भरे पेड़ की सूखी टहनी की तरह हैं जिन्हें कभी–भी उससे अलग कर उसका अस्तित्व समाप्त कर दिया जाता है। मानव मन

कितना कुण्ठित और निरीहता की पराकाष्ठा पर पहुँच चुका है कि उसके सारे संवेग मशीनी कल–पुर्जों का रूप धारण कर चुके हैं। ऊषा किरन खान ने इस कहानी की संवेदना को शब्दों में अभिव्यक्ति दी है जो इस प्रकार है– ''प्यार की छलना से स्त्री अपने आपको मुक्त नहीं कर पाती। वह फिर–फिर शब्दजाल में उलझने को विवश है, अपने सुकून के लिए पुरुष आघात पर आघात किये जाता है। यह उसकी फितरत है। नयना के बर्दाश्त की भी सीमा है। वह न तो शब्दाडंबर के जानलेवा सम्मोहन से खुद को बचा सकती है न जीने की राह पा सकती है। वह आहिस्ता–आहिस्ता ताजमहल के आँगन में दाखिल हो जाती है, संगमरमर की जालीदार खिड़की से वह यमुना को चाँद की रोशनी में बहता देखती रही।''[10]

जिस प्रेम के लिए ऐतिहासिक युद्ध हुए, कितने साम्राज्यों का निर्माण और विध्वंस हुआ, जिस प्रेम का प्रतीक, दुनिया का आश्चर्य ताजमहल बना वह प्रेम आज संवेदन शून्य हृदयों में तिरोहित हो चला है। आधुनिक स्त्री उबड़–खाबड़ पगडंडियों पर चलती हुई नीरस और उजास हुए न जाने कितने ऐसे रविभूषण के बहकाये हुए सपनों में अपने ताजमहल का प्रतिबिम्ब देख रही है। स्त्री जाति, नारी मन कितना भोला है कि इसे बार–बार छला जा सकता है।

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा की कथा पात्र 'नयना' ने प्रेम का नाम जिंदा रखा और उसकी वेदी पर अपने जीवन को होम कर दिया। इस कहानी का अनुशीलन करने पर, प्रेम की थकान, निष्फलता और घायल मन की व्यथा की अनुभूतियाँ निःसंकोच हमें 'महादेवी वर्मा' की इन पक्तियों का स्मरण कराती हैं–

> ''इस असीम तम में मिलकर
> मुझको पल भर सो जाने दो
> बुझ जाने दो देव, आज
> मेरा दीपक बुझ जाने दो।''

संदर्भ :

1. नासिरा शर्मा का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प, डॉ0 भारती बालकृष्ण घोंगड़े, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2018, पृ0 94
2. साये में धूप, दुष्यन्त कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, चौसठवाँ संस्करण–2016, पृ0 30
3. नासिरा शर्मा की चुनिन्द कहानियाँ, नासिरा शर्मा, साहित्य भण्डार, इलाहाबाद, संस्करण–2014, पृ0 69
4. नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन, संपा0 एम0 फिरोज अहमद, सामयिक बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2010, पृ0 255
5. वही, पृ0 75
6. वही, पृ0 77
7. वही, पृ0 88

8. वही, पृ0 92

9. डॉ0 सरोज सिंह, स्त्री चिन्तन की विविध दिशाएँ, पृ0 96, साहित्य भण्डार, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2019

10. नासिरा शर्मा शब्द और संवेदना की मनोभूमि, संपादक ललित शुक्ल, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2012, पृ0 233